

**स्वारी स्त्री.** (तत्.) दे. सवारी।

**स्वारोचिष पुं.** (तत्.) पुराणानुसार स्वरोचिष् के पुत्र मनु।

**स्वार्जित वि.** (तत्.) 1. अपना कमाया हुआ या अर्जित किया हुआ जैसे- स्वार्जित धन 2. अपने परिश्रम आदि से स्वयं प्राप्त किया हुआ जैसे- स्वार्जित ज्ञान।

**स्वार्थ पुं.** (तत्.) 1. अपना अर्थ या उद्देश्य, अपना प्रयोजन, अपना मतलब 2. अपना हित साधने की क्षुद्र भावना 3. हित या लाभ 4. ऐसा काम या बात जिसमें अपना हित या लाभ हो 5. काव्य. शब्द आदि का अपना अर्थ मुहा. स्वार्थ का अखाड़ा होना-किसी संस्था आदि में सभी संबंधित लोगों का अपने-अपने स्वार्थ में लीन होना, स्वार्थ में अंधा होना- अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए किसी हद तक चले जाना या अपने स्वार्थ के बारे में ही सोचना, स्वार्थ साधना- अपना मतलब निकालना। seljish

**स्वार्थ कुशल वि.** (तत्.) 1. स्वार्थ को पूरा करने में बहुत कुशल या निपुण 2. चतुर, स्वार्थी।

**स्वार्थता स्त्री.** (तत्.) खुदगर्जी, स्वार्थ की भावना या विचार।

**स्वार्थ त्याग पुं.** (तत्.) किसी विशेष उद्देश्य, व्यक्ति या कार्य आदि को साधने के लिए अपने स्वार्थ को त्यागना या छोड़ना प्रयो. स्वार्थ-त्याग का भाव राष्ट्र उत्थान के लिए अति आवश्यक है।

**स्वार्थ त्यागी वि.** (तत्.) स्वार्थ त्यागने वाला व्यक्ति पुं. स्वार्थहीन व्यक्ति।

**स्वार्थ पंडित वि.** (तत्.) बहुत बड़ा स्वार्थी या परम स्वार्थी जिसे अपने स्वार्थ के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नहीं देता है।

**स्वार्थपर वि.** (तत्.) 1. जो केवल अपना स्वार्थ या मतलब देखता हो 2. अपना स्वार्थ या मतलब पूरा करने वाला, स्वार्थी या खुदगर्ज।

**स्वार्थपरक वि.** (तत्.) स्वार्थ संबंधी।

**स्वार्थपरता स्त्री.** (तत्.) केवल अपना स्वार्थ साधने की प्रवृत्ति।

**स्वार्थ परायण वि.** (तत्.) 1. हर काम में अपना ही स्वार्थ देखने वाला 2. अन्य बातों की अपेक्षा अपने स्वार्थ को अधिक महत्वपूर्ण मानने वाला 3. हर समय अपने स्वार्थ सिद्धि में लगे रहने वाला।

**स्वार्थ परायणता स्त्री.** (तत्.) दे. स्वार्थपरता।

**स्वार्थ साधक वि.पुं.** (तत्.) 1. स्वार्थी 2. अपना काम निकालने मात्र के लिए संबंध रखने वाला।

**स्वार्थ साधन पुं.** (तत्.) स्वार्थ भाव से अपना काम निकालना, अपना मतलब या प्रयोजन पूरा करना, स्वार्थ पूर्ति करना।

**स्वार्थ साधना स्त्री.** (तत्.) दे. स्वार्थ साधन।

**स्वार्थसिद्धि स्त्री.** (तत्.) दे. स्वार्थ साधन।

**स्वार्थांध वि.** (तत्.) स्वार्थ में अंधा व्यक्ति या स्वार्थ पूरा करने के लिए बिना सोचे-समझे कार्य करने वाला। ऐसा व्यक्ति जो स्वार्थ को महत्व देता है तथा इस कार्य के लिए भले-बुरे का भी ध्यान नहीं रखता।

**स्वार्थिक वि.** (तत्.) 1. स्वार्थ से संबंधित 2. जिससे अपना मतलब या प्रयोजन पूरा हो 3. लाभदायक 4. अपने धन से किया जाने वाला या किया हुआ पदार्थ काव्य. व्या. 1. वाच्यार्थ से संबंधित 2. शब्द आदि के अपने अर्थ से संबंधित।

**स्वार्थिनी वि.** (तत्.) स्वार्थमयी नारी, स्वार्थी या मतलबी स्त्री। जैसे: स्वार्थिनी ताड़का।

**स्वार्थी वि.** (तत्.) 1. मात्र अपने हित या स्वार्थ-पूर्ति की सिद्धि चाहने वाला 2. जिसमें परमार्थ या परोपकार की भावना न हो, खुदगर्ज।

**स्वार्थोपपत्ति स्त्री.** (तत्.) 1. स्वार्थ की सिद्धि 2. अपना उद्देश्य या मतलब पूरा होना।

**स्वार्थोपरत वि.** (तत्.) स्वार्थ से विमुख, निःस्वार्थ उदा. जो हो स्वार्थोपरत भव में सर्व भूतोपकारी, हरिऔध, प्रियवास।

**स्वाल पुं.** (अर.) दे. सवाल।

**स्वाल्प पुं.** (तत्.) 1. स्वल्प होने की अवस्था या भाव 2. स्वल्पता।